पाठ्यक्रम

1. औचित्य

हम सभी एक बहत एवं जटिल व्यावसायिक वातावरण में रह रहे हैं। हम चाहे गरीब हैं अथवा अमीर हमारे चारों ओर के व्यावसायिक क्रिया कलापों ने हमारी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति करके एवं जीवन स्तर में सुधार करके हमारे जीवन को आरामदेह बना दिया है। हम विगत व्यवसाय के प्रकारों एवं प्रथाओं का स्मरण कर उसकी तुलना आज की व्यावसायिक प्रथाओं से कर सकते हैं। आज की व्यावसायिक गतिविधियॉं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास एवं श्रेष्ठ संचार प्रणालियों के कारण बड़ी तेजी से बदल रही हैं। आधुनिक उत्पादन एवं वितरण पद्धतियों ने आज के व्यावसायिक जगत को एक अंतराष्ट्रीय बाजार बना दिया है। एक देश में उत्पादित वस्तुएँ एवं सेवाएँ आज सरलता से दूसरे देशों में उपलब्ध हैं। वैज्ञानिक प्रबन्ध, उन्नत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग, सरलता से उपलब्ध वि त्त एवं बीमा ने व्यावसायिक क्रियाओं की जटिलता को बहुत राहत प्रदान की है। इसीलिए समय की माँग है कि हमारे पाठक उस आधुनिक व्यावसायिक वातावरण को समझे एवं विचार करें, जो उनके दिन प्रतिदिन के जीवन को प्रभावित करता है। व्यावसायिक जगत के संबंध में प्राथमिक ज्ञान से परिचित कराने के लिए माध्यमिक स्तर पर यह व्यवसाय अध्ययन विषय बहुत उपयोगी रहेगा।

2. उद्देश्य

माध्यमिक स्तर पर व्यवसाय अध्ययन की शिक्षा के व्यापक उद्देश्य को निम्न के लिए सक्षम बनाना है।

(i) व्यावसायिक क्रियाओं की प्रकृति एवं क्षेत्र तथा व्यवसाय संगठन के विभिन्न स्वरूपों का ज्ञान प्राप्त करना;

(ii) अर्थव्यवस्था में व्यवसाय की भूमिका एवं समाज के प्रति इसके दायत्वों की सराहना करना;

(iii) विभिन्न सामाजिक मूल्यों एवं व्यावसायिक नैतिकता की पहचान करना;

(iv) व्यापार एवं व्यापार को सहायता प्रदान करने वाली विभिन्न क्रियाएँ जैसे परिवहन, सम्प्रेषण, भंडारण, बैंकिंग, एवं बीमा की अवधरणा का बोध होना;

(v) व्यवसाय के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका की पहचान करना;

(vi) आधुनिक व्यावसायिक जगत में विक्रय एवं वितरण की प्रक्रिया को समझना;

(vii) उपभोक्ताओं के अधिकारों एवं उत्तरदायित्वों तथा उनके संरक्षण से परिचित होना;

(viii) नौकरी एवं स्वरोजगार के रूप में व्यवसाय में अपनी जीविका का चयन करना।

व्यवसाय अध्ययन

3. विषय संरचना

व्यवसाय अध्ययन पाठ्यक्रम को सात मॉड्यूल में बांटा गया हैः

मॉड्यूल	शीर्षक	अंक	घंटे
1.	व्यावसायिक वातावरण	12	35
2.	व्यावसायिक संगठन की संरचना	14	40

3.	सेवाक्षेत्र एवं व्यवसाय	16	40
4.	बैंकिंग एवं बीमा	14	30
5.	विक्रय एवं वितरण	16	45
6.	उपभोक्ता जागरुकता	16	35
7.	व्यवसाय में जीविका के अवसर	12	15
	कुल अंक	100	240

4. मूल्याकंन

इस विषय की मूल्यांकन पद्धति में अनुशिक्षक अंकित मूल्यांकन पत्र (टी.एम.ए.) और अन्तिम अथवा बाह्य परीक्षा सम्मिलित हैं। टी.एम.ए. को केवल एक अधिगम उपकरण माना जाएगा। इससे विद्यार्थियों को अपनी प्रगति जानने में और परीक्षा के लिए अच्छी तरह तैयारी करने में मदद मिलेगी। टी.एम.ए. के अंकों को अंक सूची में अलग से दर्शाया जाएगा और अन्तिम परीक्षा की समग्र ग्रेडिंग में शामिल नहीं किया जाएगा। अन्तिम अथवा बाह्य परीक्षा वर्ष में दो बार ली जाएगी अर्थात् अप्रैल एवं अक्तूबर के महीने में। मूल्यांकन की उपरोक्त दो कार्यनीतियों के अतिरिक्त जहॉं तक सम्भव हुआ प्रत्येक पाठ में स्वयं मूल्याकंन के अन्तर्निहित घटकों जैसे पाठगत पश्न, पाठान्त प्रश्न आदि को भी सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है।

5. विषय विवरण

5.1 व्यावसायिक वातावरण 12 अंक 35 घंटे

उपगमन

हम एक व्यावसायिक वातारण में रहते हैं। यह मानव समाज का एक अनिवार्य अंग है। यह व्यावसायिक क्रियाओं के तन्त्रजाल के माध्यम से विभिन्न वस्तु एवं सेवाएँ प्रदान कर हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इस मॉड्यूल का प्रारूप इस प्रकार से तैयार किया गया है कि विद्यार्थी व्यवसाय जगत से अवगत हो। वह इसके महत्त्व एवं उद्देश्यों की पहचान कर सके तथा समुदाय के प्रति व्यवसाय के उत्तरदायित्व का मूल्याकंन कर सके।

5.1.1 व्यवसायः एक परिचय

- मानवीय क्रियाएँ
- हमारे आस पास की व्यावसायिक क्रियाएँ
- व्यवसाय की अवधारणा, विशेषतांए एवं महत्त्व

5.1.2 भारतीय व्यावसायिक धरोहर

- वाणिज्य एवं उद्योग का क्रमविकास
- व्यावसायिक जगत को भारत का योगदान

5.1.3 व्यवसाय के उद्देश्य

- व्यवसाय के आर्थिक, सामाजिक, मानवीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक उद्देश्य
- व्यवसाय के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक वातावरण

5.1.4 व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व

- सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधरणा
- स्वामी, कर्मचारी, उपभोक्ता एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व
- सामाजिक मूल्य एवं व्यावसायिक नैतिकता

□ पर्यावरण संरक्षण

5.2 **व्यवसायिक संगठन की संरचना** 14 **अंक** 40 **घंटे**

उपगमन

व्यावसायिक जगत का परिचालन विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक क्रियाओं के व्यापक तन्त्रजाल के द्वारा होता है। चाहे उद्योग हो अथवा वाणिज्य, समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवसाय संगठन के विभिन्न स्वरूपों के द्वारा विभिन्न प्रकार की क्रियायें सम्पन्न की जाती हैं। इस मॉड्यूल की संरचना इस प्रकार से की गई है कि विद्यार्थी व्यावसायिक संगठन के वर्गीकरण एवं स्वरूपों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त कर सके।

5.2.1 **व्यवसाय की संरचना**

□ व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण –उद्योग एवं वाणिज्य

□ उद्योग एवं इसके प्रकार

□ वाणिज्य – व्यापार एवं इसकी सहायक क्रियाएं

□ व्यापार के प्रकार

□ ई–कॉमर्स –अर्थ एवं लाभ

5.2.2 **व्यावसायिक संगठन के स्वरूप**

□ एकल स्वामित्व-अर्थ, विशेषताएं, लाभ एवं सीमाएं, व्यावसायिक संगठन के रूप में एकल
स्वामित्व की उपयुक्तता

□ साझेदारी- अर्थ, विशेषताएं, लाभ एवं सीमाएं, साझेदारो के प्रकार, व्यावसायिक संगठन
साझेदारी की उपयुक्तता

□ □ □ □ सहकारी समिति- अर्थ, विशेषताएं, लाभ एवं सीमाएं, सहकारी समितिओं के प्रकार,
व्यावसायिक
संगठन के रूप में सहकारी समितियों की उपयुक्तता

□ □ □ संयुक्त पूँजी कम्पनी - अर्थ, विशेषताएं, लाभ एवं सीमाएं, व्यावसायिक संगठन के रूप में कम्पनी की उपयुक्तता। संयुक्त पूँजी कम्पनी के प्रकार-सार्वजनिक कम्पनियाँ, निजी कम्पनियाँ, सरकारी कम्पनियाँ, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ।

5.3 **सेवाक्षेत्र एवं व्यवसाय** 16 **अंक** 40 **घंटे**

उपगमन

आज का व्यवसाय जटिल एवं संवेदनशील है। इसकी सपफलता बड़ी सीमा तक विभिन्न प्रकार की सहायक क्रियाओं जैसे परिवहन, भंडारण, सम्प्रेषण आदि की उपलब्धता पर निर्भर करती है। इससे व्यवसाय के सामान्य क्रियान्वयन में सहायता मिलती है तथा सम्पूर्ण विश्व में व्यावसायिक क्रियाओं का एक व्यापक जाल विकसित हो जाता है। इस माड्यूल का लक्ष्य इन्हीं सहायक क्रियाओं के सम्बन्ध में अन्तर्दष्टि विकसित करना है।

5.3.1 **परिवहन**

□ रेल, सड़क, समुद्र एवं वायु परिवहन–लक्षण, लाभ एवं सीमा

□ व्यवसाय में परिवहन का महत्त्व

5.3.2 **भण्डारण**

- भण्डारण का अर्थ एवं आवश्यकता
- भंडारगहों के प्रकार
- एक आर्दश भंडारगह की विशेषताएं
- भंडारण के कार्य
- भंडारण के लाभ

5.3.3 **सम्प्रेषण**

- अर्थ एवं महत्त्व
- सम्प्रेषण के प्रकार
- सम्प्रेषण के माध्यम– पत्र, टेलिफोन, टेलीग्राफ, टेलीप्रिंटर, टेलीकांफ्रैंसिंग, फैक्स, इन्टरनैट

व्यावसायिक पत्र-व्यवहार

- प्रकृति एवं महत्त्व
- एक अच्छे व्यावसायिक पत्र के गुण
- व्यावसायिक पत्र के प्रकार– सामान्य पत्र व्यवहार, पूछ-ताछ पत्र, निर्ख, आदेश, वसूली, शिकायती पत्र

5.3.4 **डाक सेवाएँ**

- डाक सेवाओं की प्रकति
- डाकघर द्वारा प्रदत्त सेवाएँ
- डाक सेवाओं का महत्त्व

5.4 **बैंकिंग एंव बीमा** 14 **अंक** 30 **घंटे**

उपगमन

व्यवसाय की स्थापना, विकास एवं वद्धि के लिए वित्त की आवश्यकता होती है। साथ ही अनिश्चितता के वातावरण में कार्य करने के कारण व्यवसाय को अनेक प्रकार की जोखिम उठानी पड़ती हैं। बैंकिंग एवं बीमा इसी संदर्भ में व्यवसाय के संचालन में सहायता करते हैं। इस मॉड्यूल के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावसायिक क्षेत्र में बैंकिंग एवं बीमा द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न सेवओं से अवगत कराया जायेगा।

5.4.1 **बैंकिंग**

- बैंक का अर्थ एवं भूमिका
- बैंक के प्रकार
- वाणिज्यिक बैंक के कार्य

5.4.2 **बैंक जमा खाते**

- बैंक जमा खाते –प्रकार
- बचत बैंक खाता खोलना एवं परिचालन

5.4.3 **विनिमय साध्य विलेख**

- अर्थ एवं महत्त्व
- प्रकार- हुन्डियां, विनिमय पत्र, प्रतिज्ञा पत्र, चैक

5.4.4 **बीमा**

- व्यावसायिक जोखिम
- बीमे की अवधरणा एवं महत्त्व
- बीमे के प्रकार– जीवन बीमा

साधरण बीमा – अग्नि, समुद्रिक एवं अन्य बीमा

- बीमे के सिद्धान्त

5.5 विक्रय एवं वितरण 16 अंक 45 घंटे

उपगमन

आज की व्यावसायिक दुनिया में बड़ी मात्रा में उत्पादन के कारण बाजार में विक्रय एवं वितरण की एक प्रभावी प्रणाली के उपयोग की आवश्यकता हो गई है। आधुनिक प्रोद्योगिकी के कारण विक्रय एवं वितरण की तकनीकी में क्रान्तिकारी परिवर्तन आए हैं जिसने आज के व्यावसायिक जगत को विश्वव्यापी बाजार प्रदान किया है। एक देश में उत्पादित वस्तु एवं सेवाएं आज सरलता से अन्य देशों में उपलब्ध हैं। इस मॉड्यूल का प्रारूप इस प्रकार का है कि यह विद्यार्थियों को आधुनिक व्यवसाय जगत में विक्रय एवं वितरण प्रक्रिया को समझने में मदद करेगा।

5.5.1 **क्रय एवं विक्रय**

- क्रय एवं विक्रय की अवधारणा
- प्रकारः रोकड़, उधार, किराया क्रय पद्धति, एवं किश्त भुगतान विधि
- क्रय एवं विक्रय की प्रक्रिया में प्रयुक्त प्रपत्रः निर्ख, आदेश, बीजक, नामपत्र (डेबिड नोट),

जमा पत्र (क्रेडिट नोट), विक्रय पत्र, सुपुर्दगी पत्र, सूचना पत्र।

5.5.2 **वितरण के माध्यम**

- वितरण के माध्यम की अवधरणा
- प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष वितरण के माध्यम
- वितरण प्रक्रिया में थोक विक्रेता एवं फुटकर विक्रेता की भूमिका
- फुटकर व्यापार के प्रकार - छोटे पैमाने एवं बड़े पैमाने का व्यापार

5.5.3 बड़े पैमाने का फुटकर व्यापार

- बड़े पैमाने का फुटकर व्यापार–विभागीय भंडार, सुपर बाजार, बहुसंख्यक दुकानें
- दुकान रहित फुटकर व्यापार–डाक द्वारा व्यापार, टेली शॉपिंग, स्वचालित बिक्री मशीन,
- इन्टरनैट के माध्यम से बिक्री

5.5.4 **वैयक्तिक विक्रय**

- अर्थ एवं महत्त्व
- सफल विक्रयकर्ता के गुण

5.5.5 **विज्ञापन**

- अर्थ एवं महत्त्व
- विज्ञापन के माध्यम

5.5.6 **विक्रय संवर्धन**

- अर्थ एवं महत्त्व
- विक्रय संवर्धन की विधियाँ

5.6 **उपभोक्ता जागरूकता** 16 **अंक** 35 **घंटे**

उपगमन

हम सभी उपभोक्ता हैं तथा प्रत्येक व्यवसाय का मुख्य उद्‌देश्य उपभोक्ता की संतुष्टि होना चाहिए। लेकिन व्यवहार में व्यवसायी भिन्न-भिन्न प्रकारों से उपभोक्ता का शोषण करता है। कभी व्यावसायी कम गुणवत्ता वाली वस्तुओं का विक्रय करते हैं तो कभी अधिक मूल्य वसूलते हैं। इसका कारण है कि हम एक उपभोक्ता के रूप में अपने अधिकार एवं उत्तरदायत्वों के प्रति सचेत नहीं है। इस मॉड्‌यूल की संरचना का उद्‌देश्य विद्यार्थियों मे उपभोक्ता के रूप में उनके अधिकार, कर्तव्य एवं कानून के विभिन्न प्रावधनों के द्वारा संरक्षण की समझ उत्पन्न करना है।

5.6.1 **उपभोक्ता–अधिकार एवं उत्तरदायित्व**

- उपभोक्ता–अर्थ
- उपभोक्तावाद
- उपभोक्ता के अधिकार
- उपभोक्ता के उत्तरदायित्व

5.6.2 **बुद्धिमत्ता पूर्ण खरीदारी**

- बुद्धिमत्तापूर्ण खरीदारी की अवधारणा
- क्रय निर्णयों के निर्धारक तत्त्व
- बुद्धिमत्तापूर्ण खरीदारी के लिए ध्यान देने योग्य तत्व
- गुणवत्ता एवं प्रमाणीकरण चिन्ह–आइ एस आई, एगमार्क, एफ पी ओ, हॉलमार्क, आइ एस ओ, वूलमार्क, ईकोमार्क, भारत II. (यूरो–II)

5.6.3 **उपभोक्ता संरक्षण**

- अर्थ एवं आवश्यकता
- उपभोक्ता की समस्याएं
- उपभोक्ता संरक्षण से सम्बन्धित पक्ष
- उपभोक्ताओं को कानूनी संरक्षण
- उपभोक्ता फोरम एवं दावों का निपटारा कैसे किया जाए
- उपभोक्ताओं में जागरूकता लाने में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका

5.6.4 **बचत एवं विनियोग**

- आय के स्रोत
- धन का बुद्धिमत्तापूर्ण व्यय
- बचत की आवश्यकता
- विनियोग के विकल्प

5.7 **व्यवसाय में जीविका के अवसर** 12 **अंक** 15 **घंटे**

उपगमन

हम में से प्रत्येक को कभी न कभी अपनी जीविका अर्जित करने के लिए किसी न किसी रोजगार का चयन करना होता है। यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। व्यवसाय हमें स्वरोजगार एवं

नौकरी के रूप में बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर प्रदान करता है। देश के विकास और बेराजगारी की समस्या का सर्वश्रेष्ठ समाधन आज स्वरोजगार है। स्वयं अपने लिए कार्य करना न केवल एक चुनौती है अपितु प्रसन्नता भी प्रदान करता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस मॉड्यूल की संरचना की गई है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को रोज़गार के विभिन्न अवसरों एवं कार्य जगत में प्रवेश के लिए आवश्यक विभिन्न योग्यताओं से परिचित कराना है।

5.7.1 **जीविका का चयन**

- अवधरणा एवं महत्त्व
- व्यवसाय में रोज़गार के अवसर
- स्वरोज़गार का महत्त्व
- जीविका प्राप्त करने के लिए आवश्यक योग्यताएं

5.7.8 **उद्यमशिलता**

- अवधारणा एवं महत्त्व
- एक सफल उद्यमी के गुण
- एक उद्यमी के कार्य
- एक छोटे व्यावयायिक उद्यम को कैसे प्रारंभ करें।